ISBN:978-81-974990-9-8

11.कोविड–19का शिक्षण विधियों पर प्रभाव

डॉ. हेमा तिवारी

सहायक प्राध्यापिका,
ज्ञानोदय कालेज ऑफ एजुकेशन, जांजगीर (छ.ग.).

परिचय –

कोविड –19 महामारी ने मानव इतिहास में शिक्षा प्रणाली में सबसे बड़ा व्यवधान पैदा किया है जिसमें 200 से अधिक देशों में लगभग 1.6 बिलियन शिक्षार्थी प्रभावित हुए हैं। स्कूल संस्थाओं और अन्य शिक्षण संस्थानों के बंद होने से दुनिया की 94 प्रतिशत से अधिक छात्र आबादी प्रभावित हुई है। इसने हमारे जीवन के सभी पहलुओं में दूरगामी परिवर्तन लाए है। सामाजिक दूरी और प्रतिबंधनात्मक आंदोलन नीतियों ने पारंपरिक शैक्षिक प्रभाव को काफी हद तक बाधित किया है। प्रबंध में ढील के बाद स्कूलों को फिर से खोलना एक और चुनौती थी क्योंकि कई नई मानक संचालन प्रक्रिया लागू की गई।

कोविद–19 महामारी के थोड़े समय के भीतर ही कई शोधकर्ताओं ने अलग–अलग तरीकों से शिक्षक और सीखने पर अपने कामों को साझा किया है। कई स्कूल कॉलेज और विश्वविद्यालय ने आमने–सामने की पढ़ाई बंद कर दी। आने वाले भविष्य में 2020 से 2022 का शैक्षिक वर्ष उससे भी ज्यादा बर्बाद होने का डर है। समय की मांग है कि वैकल्पिक शैक्षिक प्रणाली और मूल्यांकन रणनीतियों को नया रूप दिया जाए और उन्हें लागू किया जाए। कोविड महामारी ने हमें डिजिटल शिक्षा शुरू करने का मार्ग प्रशस्त करने का अवसर प्रदान किया है। इस अध्याय का उद्देश्य विभिन्न शोध पत्रों के ऑनलाइन शिक्षण और सीखने पर कोविद–19 महामारी के प्रभाव पर एक व्यापक रिपोर्ट प्रदान करना और आगे का रास्ता दिखाना है।

कोविद–19 हमारी का वैश्विक प्रकोप दुनिया भर में फैल गया जिससे लगभग सभी देशों और श्रेणी को भी प्रभावित किया है इस प्रकार की पहली बार दिसंबर 2019 में चीन के वुहान में पहचान की गई थी। दुनिया भर के देशों ने लोगों को संवेदनशील देखभाल करने के लिए आगाह किया।

सार्वजनिक देखभाल रणनीतियों में हाथ धोना, चेहरे पर मास्क पहनना, शारीरिक दूरी बनाए रखना और सामूहिक समारोह और स्वभाव से बचाना शामिल था। लॉकडाउन और घर पर रहने की रणनीति को अपनाया गया और बीमारी के संरक्षण को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक कार्यवाही के रूप में लागू किया गया।

कोविद–19 महामारी में भारत सरकार द्वारा उठाए गए कदमों के बारे में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री डॉक्टर हर्षवर्धन का 14 सितंबर 2020 के अनुसार 11 सितंबर 2020 तक दुनिया भर में 215 देश और प्रांत इस महामारी से प्रभावित हुए। वल्ड हेल्थ आर्गेनाईजेशन के अनुसार दुनिया भर में 9 लाख 5000 से अधिक मौतों के साथ 2 करोड़ 79 लाख से अधिक पुष्ट मामले हैं कोरोना के मामले में मृत्यु दर 3.2 प्रतिशत है। भारत में 11 सितंबर 2020 तक कुल 4565414 मामलो की पुष्टि की गई है और 76271 लोगों की मौत हुई तथा मृत्यु दर 1.67 प्रतिशत है अब तक 35 लाख 42 हजार 663 मरीज स्वस्थ हो चुके हैं। संक्रमण के सबसे ज्यादा मामले और मौते मुख्य रूप से महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पश्चिम बंगाल, बिहार, तेलंगाना, उड़ीसा, असम, केरल, गुजरात में हुई है इन सभी राज्यों में एक लाख से अधिक मामले सामने आए।

कोविद–19 के प्रबंधन में सरकार और पूरे सामाजिक सहयोग के हमारे मिले जुले प्रयासाो से भारत संक्रमण के मामले और उससे होने वाली मौतों की संख्या समिति करने में सक्षम रहा है। भारत में प्रति 10 लाख की आबादी पर 3328 मामले सामने आए वही प्रति 10 लाख की आबादी पर 55 मौतें हुई है, जो की दुनिया में समान रूप से प्रभावित देशों की तुलना में सबसे न्यूनतम में से एक है।

कोविद–19 के कारण शिक्षण विधियां प्रभावित हुई इससे ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली का जन्म हुआ जिससे व्याखान विधि, प्रश्नोत्तर विधि, चर्चा विधि, कहानी विधि, वैकल्पिक विधि द्वारा अध्ययन कराया गया। जिससे बच्चों का मानसिक विकास ऑफलाइन शिक्षक की तरह विकसित नहीं हुआ। कोविड–19 के दौरान ऑनलाइन शिक्षण विधि में छात्रों के लिए निम्नलिखित तरह से लाभकारी हो गई है। कोविड–19 महामारी के दौरान ऑनलाइन अध्ययन वातावरण में शिक्षण की विधि निम्न कारणों से और भी अधिक मूल्यवान हो गई।

सीखने की निरंतरता में बढ़त, लॉकडाउन और सुरक्षा उपायों के कारण पारंपरिक कक्षाओं के बाधित होने के कारण ऑनलाइन शिक्षण ने शिक्षा को जारी रखने की अनुमति दी। प्रश्न–उत्तर पद्धति ने दूरस्थ रूप से इंटरैक्टिव शिक्षण अनुभवों की सुविधा प्रदान की, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि छात्र शारीरिक दूरी के बावजूद पाठ्यक्रम सामग्री से प्रभावी ढंग से जुड़ सकते है।

जुड़ाव व सहभागिता के साथ पढ़ाई ऑनलाइन शिक्षण कभी–कभी अलग–थलग महसूस करा सकता है। प्रश्न–उत्तर पद्धति का उपयोग करके, प्रशिक्षक बातचीत और जुड़ाव की भावना बनाए रख सकते हैं। छात्रों को सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया, जिससे सीखने की प्रक्रिया से अलगाव की भावनाओं से निपटने में मदद मिली।

पढ़ाई में लचीलापन ऑनलाइन प्लेटफॉर्म ने कहीं से भी शैक्षिक सामग्री तक पहुँचने में लचीलापन प्रदान किया। प्रश्न–उत्तर प्रारूप को अतुल्यकालिक शिक्षण के लिए अनुकूलित किया जा सकता है, जहाँ छात्र अपनी गति से संकेतों और प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं, विभिन्न शेड्यूल और समय क्षेत्रों को समायोजित कर सकते हैं। आसान मूल्यांकन करना प्रश्न–उत्तर गतिविधियों के माध्यम से दूरस्थ रूप से छात्रों की समझ का आकलन करना आसान बना दिया गया।

शिक्षक प्रश्न पूछने और प्रतिक्रियाओं का तुरंत मूल्यांकन करने के लिए क्विज, चर्चा बोर्ड या लाइव सत्र का उपयोग कर सकते हैं। इससे छात्रों की प्रगति के लिए महत्वपूर्ण निरंतर फीडबैक लूप की सुविधा मिली। आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा मिलना महामारी के कारण नए शिक्षण वातावरण में त्वरित अनुकूलन की आवश्यकता के साथ, आलोचनात्मक सोच कौशल आवश्यक हो गए। प्रश्न–उत्तर पद्धति ने छात्रों को जानकारी का विश्लेषण करने, निष्कर्ष निकालने और अपनी समझ को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया, जिससे दूरस्थ सेटिंग में भी आलोचनात्मक सोच कौशल को बढ़ावा मिला।

समावेशिता और भागीदारी में बढोतरी रूऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्म ने व्यापक भागीदारी की अनुमति दी। जो छात्र पारंपरिक कक्षा के माहौल में बोलने में संकोच कर सकते थे, वे अक्सर ऑनलाइन योगदान देने में अधिक सहज महसूस करते थे। इस समावेशिता ने छात्रों के बीच विचारों और दृष्टिकोणों के विविध आदान–प्रदान को बढ़ावा दिया।

विभिन्न शिक्षण शैलियों के लिए समर्थन प्रतिशत ऑनलाइन शिक्षण मल्टीमीडिया संसाधनों और इंटरैक्टिव प्रश्न–उत्तर सत्रों के माध्यम से विभिन्न शिक्षण शैलियों को प्रभावी ढंग से पूरा कर सकता है। दृश्य शिक्षार्थी आरेखों और वीडियो से लाभ उठा सकते हैं, जबकि श्रवण शिक्षार्थी चर्चाओं और व्याख्यानों के माध्यम से जुड़ सकते हैं।

अनिश्चितता के लिए अनुकूलनप्रतिशत महामारी ने दुनिया भर में शिक्षा प्रणालियों में अनिश्चितता ला दी। प्रश्न–उत्तर पद्धति ने एक बहुमुखी उपकरण प्रदान किया जिसे बदलती परिस्थितियों के अनुकूल बनाया जा सकता है, चाहे लाइव वर्चुअल कक्षाओं, रिकॉर्ड किए गए सत्रों या लिखित असाइनमेंट के माध्यम से। शिक्षक–छात्र संचार में वृद्धि प्रतिशत शिक्षक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से छात्रों के साथ नियमित संचार बनाए रख सकते हैं, प्रश्नों को संबोधित कर सकते हैं, स्पष्टीकरण प्रदान कर सकते हैं और आवश्यकतानुसार सहायता प्रदान कर सकते हैं। चुनौतीपूर्ण समय के दौरान प्रेरणा और समुदाय की भावना बनाए रखने के लिए यह संचार महत्वपूर्ण था। भविष्य के कौशल के लिए तैयारी महामारी के दौरान दूरस्थ कार्य और डिजिटल साक्षरता के महत्वपूर्ण होने के कारण, ऑनलाइन शिक्षण अनुभवों ने छात्रों को भविष्य के कार्यबल के लिए आवश्यक कौशल से लैस किया। प्रश्न–उत्तर पद्धति ने सक्रिय जुड़ाव और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देकर, अकादमिक ज्ञान के साथ–साथ इन कौशलों को विकसित करने में मदद की।

संक्षेप में, शिक्षण की प्रश्न–उत्तर पद्धति कोविड–19 के दौरान शैक्षिक निरंतरता बनाए रखने, जुड़ाव को बढ़ावा देने, सीखने के परिणामों का आकलन करने और ऑनलाइन अध्ययन वातावरण में आलोचनात्मक सोच कौशल को बढ़ावा देने के लिए अमूल्य साबित हुई। इसने शारीरिक दूरी के उपायों द्वारा बनाए गए अंतर को पाटने में मदद की, यह सुनिश्चित किया कि छात्र महामारी द्वारा उत्पन्न चुनौतियों के बावजूद प्रभावी ढंग से सीखना जारी रख सकें।

प्रदर्शन विधि की उपयोगिता का शिक्षण पर प्रभाव

कोविड–19का शिक्षा पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा ऑफलाइन होने वाली कक्षाओं का संचालन ऑनलाइन होने लगा। ऑनलाइन शिक्षा में प्रदर्शन विधि काफी सार्थक विधि मानी गई। इस शिक्षण विधि के द्वारा ऑनलाइन कक्षाओं में या अन्य शिक्षा के लिए संचालित एंड्रॉयड एप्लिकेशन में छात्रों को वीडियो के माध्यम से प्रदर्शन विधि का उपयोग करके छात्र–छात्राओं को शिक्षा दिया गया।

प्रदर्शन विधि में शिक्षक ऑनलाइन कक्षाओं में छात्र–छात्राओं को स्लाइड के माध्यम से समझाते थे। ये स्लाइड पाठ्यक्रम व विषय वस्तु पर आधारित होते थे। यह विधि ऑनलाइन छोटी कक्षाओं के लिए काफी सार्थक मानी गई है। कोविड–19 की ऑनलाइन कक्षाओं में इस विधि से छात्र–छात्राओं का ध्यान आकर्षण व ध्यान केंद्र शिक्षक द्वारा अपनी गई स्लाइड उपकरणों और यंत्रों पर होता है तथा रुचि पूर्ण होकर छात्र ऑनलाइन क्लास में अध्ययन करते हैं।

कोविड–19 में यह शिक्षण विधि विज्ञान के छात्र–छात्राओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण व कारगर शिक्षण विधि माना गया। ऑनलाइन कक्षाओं में विज्ञान की छात्र–छात्राओं को वैज्ञानिक उपकरणों यंत्रों का प्रदर्शन इसी शिक्षण विधि से किया गया। विभिन्न शिक्षा संबंधी मॉडलों का प्रदर्शन भी इसी विधि से कोविड–19 में किया गया। इस शिक्षण विधि से ही ऑनलाइन कक्षाओं को छात्र–छात्राओं के अनुरूप रुचि पूर्ण व रोचक बनाया गया। इससे छात्र–छात्राओं की ज्ञान में वृद्धि हुई व अधिकांश छात्र–छात्राओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा।यह विधि प्रश्नोत्तरी पर भी आधारित था कोई भी छात्र शिक्षकों को प्रश्न कर सही ज्ञान प्राप्त कर सकता था ऑनलाइन कक्षाओं के संचालन में इस विधि का प्रयोग करते समय शिक्षक को कई समस्याओं का सामना करना पड़ा।

छात्र–छात्राओं की भी अपनी कई समस्याएं थी। अगर शिक्षक संस्थान से ऑनलाइन कक्षा संचालन करते तो शिक्षण सामग्री व संसाधनों की कमी ना होती लेकिन अधिकांश शिक्षण संस्थान कोविड–19 में बंद रहे व शिक्षकों को अपने घरों से ऑनलाइन कक्षाओं का संचालन करना पड़ा स्लाइड के अलावा कई प्रकार के यंत्रों व उपकरण की कमी का सामना शिक्षकों को करना पड़ा।

इंटरनेट कनेक्टिविटी अगर सही ना हो तो ऑनलाइन कक्षा संचालन में प्रदर्शित हो रहे स्लाइड या उपकरण यंत्रों का प्रदर्शन वीडियो के माध्यम से सही तरीके से नहीं हो पता। यह शिक्षक व छात्र–छात्राओं की सबसे बड़ी समस्या कोविड–19 में थी। कोविड–19 में इन संसाधनों की पर्याप्त मात्रा में पूर्ति न की जा सकी तथा छात्र–छात्राओं ने संसाधन की कमी होने पर भी अपनी शिक्षण कोविड–19 में पूरी की।

प्रदर्शन विधि में यंत्र एवं उपकरणों का प्रदर्शन शिक्षण किया जाता है, ऑफलाइन कक्षाओं में छात्रों को वास्तविकता तथा छात्र–छात्राओं के सामने ही प्रदर्शन विधि का प्रयोग कर शिक्षण कराया जाता है।

ऑनलाइन कक्षाओं में वे शिक्षण तो करते थे लेकिन कई छात्र–छात्राओं को प्रदर्शित वस्तु या संसाधन आभासी प्रतीत होता था तथा समय सीमा के तहत शिक्षक को अपना शिक्षण पूरा करना होता था। सभी छात्र–छात्राओं के प्रश्नों का उत्तर समय की कमी के कारण शिक्षक नहीं दे पाते थे।

ऑनलाइन कक्षाओं में दृष्टिबाधित बच्चों के लिए प्रदर्शन विधि की सार्थकता अन्य छात्र–छात्राओं की अपेक्षा नगण्य थी। वे ऑडियो तो सुन सकते थे मगर वीडियो में प्रदर्शित हो रहे स्लाइड यंत्रों व उपकरणों को देख नहीं सकते थे।

ऑनलाइन कक्षा में अगर शिक्षक योग्य प्रशिक्षित हो तो प्रदर्शन विधि से शिक्षण आसान हो जाता है। छात्र–छात्राओं व शिक्षक को ऑनलाइन कक्षा में सम्मिलित होते समय शांतिपूर्ण माहौल से युक्त स्थान का प्रयोग करना चाहिए जिससे प्रदर्शन विधि में शिक्षण करते समय कोई शोरगुल ना हो, शोर गुल से कक्षा में बाधा उत्पन्न होता है।

कोविड–19 का शिक्षण विधि पर नकारात्मक प्रभाव

1. शिक्षा में रुकावट का होना–

- **विद्यालय और कॉलेजों का बंद होना**– स्कूल और कॉलेजों के बंद होने से छात्रों की शिक्षा में रुकावट आई। नियमित कक्षाओं के अभाव में बच्चों का शैक्षणिक विकास प्रभावित हुआ।
- **शैक्षणिक वर्ष का व्यवधान**– परीक्षाओं और कक्षाओं के स्थगन के कारण शैक्षणिक वर्ष में अव्यवस्था उत्पन्न हुई।

2. डिजिटल डिवाइड की उपयोगिता–

- **इंटरनेट और उपकरणों की कमी–** ग्रामीण और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के बच्चों के पास ऑनलाइन शिक्षा के लिए आवश्यक उपकरण और इंटरनेट कनेक्शन की कमी रही।

- **शैक्षणिक असमानता–** शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच शैक्षणिक संसाधनों की उपलब्धता में भारी अंतर देखने को मिला।

3. मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव–

- **अकेलापन और तनाव**– लॉकडाउन और सामाजिक दूरी के कारण छात्रों में मानसिक तनाव, अकेलापन, और अन्य मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं में वृद्धि हुई।
- **मनोवैज्ञानिक प्रभाव–** शिक्षा के नियमित रूप से दूर होने के कारण बच्चों की मनोवैज्ञानिक स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

4. परीक्षाओं में देरी–

- **शैक्षणिक सत्र में देरी**– बोर्ड और विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में देरी हुई, जिससे छात्रों की पढ़ाई और करियर योजनाएं प्रभावित हुईं।
- **भविष्य की अनिश्चितता**– परीक्षाओं में देरी और रिजल्ट के इंतजार के कारण छात्रों में भविष्य को लेकर असमंजस और चिंता बनी रही।

5. शारीरिक गतिविधियों का अभाव–

- **शारीरिक शिक्षा और खेलों में कमी–** ऑनलाइन शिक्षा के कारण शारीरिक गतिविधियों और खेलों में कमी आई, जिससे बच्चों का शारीरिक विकास प्रभावित हुआ।

कोविड–19 का शिक्षण विधि पर सकारात्मक प्रभाव

1. डिजिटल साक्षरता में वृद्धि–

- **तकनीकी कौशल में सुधार–** ऑनलाइन शिक्षा ने छात्रों और शिक्षकों दोनों की डिजिटल साक्षरता और तकनीकी कौशल में सुधार किया। नए सॉफ्टवेयर और तकनीकों का उपयोग बढ़ा।
- **ऑनलाइन संसाधनों का उपयोग**– छात्रों ने विभिन्न ऑनलाइन संसाधनों, जैसे ई–बुक्स, वीडियो लेक्चर्स, और वर्चुअल लाइब्रेरी का उपयोग करना सीखा।

2. नई शिक्षा विधियाँ–

- **वर्चुअल क्लासरूम–** वर्चुअल क्लासरूम, वेबिनार, और ऑनलाइन टेस्टिंग जैसी नई पद्धतियाँ अपनाई गईं, जिससे शिक्षा में नवाचार आया।

- **हाइब्रिड लर्निंग**– हाइब्रिड लर्निंग मॉडल का विकास हुआ, जिसमें ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों प्रकार की शिक्षा का संयोजन किया गया।

3. समय और संसाधनों की बचत–

- **आने–जाने का समय बचना**– छात्रों और शिक्षकों को आने–जाने का समय बचा, जिससे वे अपनी पढ़ाई और अध्यापन पर अधिक समय केंद्रित कर सके।
- आर्थिक बचत परिवहन और अन्य संबंधित खर्चों में कमी आई।

4. ग्लोबल एक्सेस–

- **विश्वभर के विशेषज्ञों से सीखने का अवसर–** ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से छात्रों को विश्वभर के विशेषज्ञों और शिक्षकों से सीखने का अवसर मिला।
  - **अंतर्राष्ट्रीय पाठ्यक्रमों की उपलब्धता**– विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय पाठ्यक्रम और कार्यक्रम ऑनलाइन सुलभ हुए, जिससे छात्रों का ज्ञान और दृष्टिकोण व्यापक हुआ।

5. फ्लेक्सिबिलिटी–

- **स्व–अध्ययन की स्वतंत्रता–** छात्रों को अपनी सुविधा अनुसार पढ़ाई करने की आजादी मिली, जिससे स्व–अध्ययन की प्रवृत्ति में वृद्धि हुई।
- **पाठ्यक्रम का पुनरावलोकन–** छात्र किसी भी समय अपने पाठ्यक्रम का पुनरावलोकन कर सकते हैं, जिससे उनका शैक्षणिक प्रदर्शन बेहतर हुआ।

ऑनलाइन कक्षाएं और ऑफलाइन कक्षाएं कई प्रमुख अंतर निम्नलिखित है–

1. सीखने का तरीका–

- **ऑनलाइन कक्षाएं–** जूम, गूगल मीट या समर्पित शैक्षिक पोर्टल जैसे प्लेटफार्मों का उपयोग करके इंटरनेट पर आयोजित की जाती हैं।
- **ऑफलाइन कक्षाएं–** भौतिक कक्षाओं में आयोजित की जाती हैं जहां छात्र और शिक्षक एक साथ मौजूद होते हैं और अंतप्रतिशतक्रिया करते है।

2. लचीलापन का बढ़ना–

- **ऑनलाइन कक्षाएं–** अक्सर शेड्यूलिंग और स्थान के संदर्भ में अधिक लचीलापन प्रदान करती हैं। छात्र इंटरनेट कनेक्शन के साथ कहीं से भी भाग ले सकते हैं।

- **ऑफलाइन कक्षाएं–** निश्चित कार्यक्रम और विशिष्ट स्थानों पर भौतिक उपस्थिति की आवश्यकता होती है।

3. इंटरैक्शन में उपयोगिता–

- **ऑनलाइन कक्षाएं–** बातचीत डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से होती है, जिसमें चौट फंक्शन, वीडियो कॉल और चर्चा मंच शामिल हैं। इसमें कभी–कभी आमने–सामने की बातचीत की तात्कालिकता और व्यक्तिगत स्पर्श का अभाव हो सकता है।
- **ऑफलाइन कक्षाएं–** छात्रों और शिक्षकों के बीच सीधे, आमने–सामने बातचीत की अनुमति दें, जिससे वास्तविक समय पर चर्चा और जुड़ाव की सुविधा हो।

4. सीखने का माहौल–

- **ऑनलाइन कक्षाएं–** छात्रों को एक विश्वसनीय इंटरनेट कनेक्शन और उपयुक्त तकनीक (जैसे कंप्यूटर या टैबलेट) की आवश्यकता होती है। घर पर तकनीकी समस्याओं या विकर्षणों के कारण सीखना प्रभावित हो सकता है।
- **ऑफलाइन कक्षाएं–** पुस्तकालयों, प्रयोगशालाओं और व्यक्तिगत सहायता जैसे भौतिक संसाधनों तक पहुंच के साथ सीखने के लिए अनुकूल एक संरचित वातावरण प्रदान करें।

5. शिक्षण विधियाँ पर असर–

- **ऑनलाइन कक्षाएं–** भौतिक उपस्थिति की कमी की भरपाई के लिए अक्सर अधिक मल्टीमीडिया सामग्री और इंटरैक्टिव टूल शामिल होते हैं।
- **ऑफलाइन कक्षाएं–** प्रदर्शन, समूह गतिविधियों और व्यावहारिक प्रयोगों सहित शिक्षण विधियों की एक विस्तृत श्रृंखला को नियोजित किया जा सकता है।

6. आंकलन का आसान होना–

- **ऑनलाइन कक्षाएं–** अक्सर शैक्षणिक अखंडता सुनिश्चित करने के उपायों के साथ, क्विज, असाइनमेंट और परीक्षाओं के माध्यम से मूल्यांकन ऑनलाइन आयोजित किया जा सकता है।
- **ऑफलाइन कक्षाएं–** आमतौर पर मूल्यांकन के पारंपरिक तरीके शामिल होते हैं जैसे व्यक्तिगत परीक्षा, प्रस्तुतियाँ और व्यावहारिक मूल्यांकन।

7. सामाजिक संपर्क से बचना–

- **ऑनलाइन कक्षाएं–** सामाजिक संपर्क को डिजिटल संचार तक सीमित कर सकती हैं, जिससे व्यक्तिगत संबंध बनाने के अवसर संभावित रूप से कम हो सकते हैं।
- **ऑफलाइन कक्षाएं–** छात्रों और संकाय सदस्यों के बीच सामाजिक संपर्क और नेटवर्किंग के अवसर प्रदान करें।

8. पहुंच–योग्यता पर प्रभाव–

- **ऑनलाइन कक्षाएं–** ऐसे व्यक्तियों के लिए शिक्षा तक पहुंच प्रदान करें जिनके पास भौगोलिक बाधाएं या शारीरिक अक्षमताएं हो सकती हैं जो शारीरिक कक्षाओं में भाग लेने को चुनौतीपूर्ण बनाती हैं।
- **ऑफलाइन कक्षाएं–** स्थान, परिवहन, या शारीरिक अक्षमताओं जैसे कारकों के कारण पहुंच सीमित हो सकती है।

9. समय का प्रबंधन–

- **ऑनलाइन कक्षाएं–** छात्रों से आत्म–अनुशासन और प्रभावी समय प्रबंधन कौशल की आवश्यकता होती है, क्योंकि अक्सर उनका अपने शेड्यूल पर अधिक नियंत्रण होता है।
- **ऑफलाइन कक्षाएं–** निर्धारित कार्यक्रम हैं जिनका छात्रों को पालन करना चाहिए, जिससे दिनचर्या के माध्यम से समय प्रबंधन कौशल विकसित करने में मदद मिलेगी।

10. कम लागत–

- **ऑनलाइन कक्षाएं–** संभावित रूप से छात्रों के लिए अधिक लागत प्रभावी हो सकती हैं, क्योंकि वे आने–जाने, आवास और कभी–कभी पाठ्यपुस्तकों से संबंधित खर्चों को खत्म कर देती हैं।
- **ऑफलाइन कक्षाएं–** आने–जाने, कैंपस की फीस और रहने की व्यवस्था जैसे खर्चों के कारण अधिक लागत शामिल हो सकती है।

11. व्यक्तिगत शिक्षा की सहजता–

- **ऑनलाइन कक्षाएं–** अनुकूली शिक्षण प्रौद्योगिकियों और अनुकूलित सामग्री वितरण के माध्यम से वैयक्तिकृत सीखने के अनुभवों को सुविधाजनक बना सकती हैं।
- **ऑफलाइन कक्षाएं–** आमने–सामने बातचीत के दौरान प्रशिक्षकों से तत्काल प्रतिक्रिया और व्यक्तिगत मार्गदर्शन के अवसर प्रदान करें।

12. सांस्कृतिक विचार का आदान–प्रदान–

- **ऑनलाइन कक्षाएं–** वैश्विक शिक्षण समुदाय को बढ़ावा देते हुए, दुनिया भर के छात्रों की विविध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और दृष्टिकोण को समायोजित कर सकती हैं।
- **ऑफलाइन कक्षाएं–** अक्सर स्थानीय सांस्कृतिक संदर्भ को प्रतिबिंबित करती हैं और एक विशिष्ट समुदाय के भीतर सांस्कृतिक आदान–प्रदान के अवसर प्रदान कर सकती हैं।

13. प्रौद्योगिकी एकीकरण का बढ़ना–

- **ऑनलाइन कक्षाएं–** छात्रों के बीच डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए डिजिटल उपकरणों और प्लेटफार्मों का उपयोग करने में दक्षता की आवश्यकता है।
- **ऑफलाइन कक्षाएं–** शैक्षणिक संस्थान के संसाधनों और नीतियों के आधार पर, प्रौद्योगिकी के उपयोग के साथ–साथ पारंपरिक शिक्षण विधियों पर जोर दें।

14. समुदाय और नेटवर्किंग पर जोर–

- **ऑनलाइन कक्षाएं–** वैश्विक स्तर पर छात्रों और पेशेवरों को जोड़ते हुए, आभासी समुदायों और ऑनलाइन मंचों के माध्यम से नेटवर्किंग के अवसर प्रदान करें।
- **ऑफलाइन कक्षाएं–** स्थानीय और व्यक्तिगत कनेक्शन को बढ़ावा देते हुए, सामाजिक कार्यक्रमों, सम्मेलनों और परिसर की गतिविधियों के माध्यम से व्यक्तिगत नेटवर्किंग के अवसर प्रदान करें।

ये अंतर इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि कैसे ऑनलाइन और ऑफलाइन कक्षाओं के बीच का चुनाव सीखने के अनुभव के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित कर सकता है, जिसमें पहुंच और लागत से लेकर बातचीत और शैक्षिक परिणाम शामिल हैं।

व्यक्तिगत प्राथमिकताओं, शैक्षिक लक्ष्यों और परिस्थितियों के आधार पर प्रत्येक मोड की अपनी ताकत और विचार होते हैं।

कोविड–19के शिक्षण विधियों के दौरान चर्चा–परिचर्चाएं

कोविड–19 महामारी ने वैश्विक स्तर पर गहरी छाप छोड़ी है और विभिन्न प्रकार की चर्चाएं और परिचर्चाएं उत्पन्न की हैं।

यहाँ कुछ प्रमुख बिंदु हैं जो कोविड–19 के दौरान चर्चाओं का केंद्र बने रहे।

1. **स्वास्थ्य प्रणाली की तैयारी और प्रतिक्रियाएं–** विभिन्न देशों की स्वास्थ्य प्रणालियों की महामारी के प्रति प्रतिक्रिया की व्यापक चर्चा हुई। इस दौरान बहुत सारी नियमों का बच्चो ने पालन किया।
2. **वैक्सीन का वितरण सभी को–** टीकों का विकास और उन्हें जल्द से जल्द लोगों तक पहुँचाने की प्रक्रिया चर्चा का एक बड़ा हिस्सा रही। फाइजर, मॉडर्ना, और एस्ट्राजेनेका जैसी कंपनियों के टीकों पर विशेष ध्यान केंद्रित हुआ।
3. **सामाजिक और आर्थिक प्रभाव पर असर–** लॉकडाउन, यात्रा प्रतिबंध, और सामाजिक दूरी के नियमों ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया। रोजगार, व्यवसायों की बंदी, और आर्थिक राहत पैकेज पर व्यापक बहस हुई।
4. **शिक्षा प्रणाली पर प्रभाव–** स्कूलों और विश्वविद्यालयों के बंद होने से ऑनलाइन शिक्षा का तेजी से प्रसार हुआ। इसके साथ ही डिजिटल डिवाइड और छात्रों पर मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव भी चर्चित विषय रहे।
5. **मनोवैज्ञानिक और सामाजिक प्रभाव–** महामारी ने लोगों के मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डाला। अकेलापन, चिंता, और अवसाद जैसी समस्याओं में वृद्धि देखी गई।
6. **टीकाकरण के प्रति झिझक और मिथक–** वैक्सीन के प्रति झिझक और उससे संबंधित गलत सूचनाओं का फैलाव भी चर्चा का विषय रहा। इसके निवारण के लिए जन जागरूकता अभियानों की आवश्यकता पर जोर दिया गया।
7. **वैज्ञानिक अनुसंधान और नवाचार**– कोविड–19 के दौरान वैज्ञानिक समुदाय ने अनुसंधान और विकास के क्षेत्र में तेजी से प्रगति की। नए वायरस के प्रकार, उपचार की विधियाँ, और टीकों के विकास पर निरंतर शोध हुआ।
8. **सरकारी नीतियाँ और निर्णय का असर–** विभिन्न सरकारों द्वारा महामारी से निपटने के लिए उठाए गए कदमों, जैसे कि लॉकडाउन, मास्क पहनना अनिवार्य करना, और आर्थिक पैकेज, की भी गहन चर्चा हुई।

इन सब चर्चाओं और परिचर्चाओं ने हमें यह समझने में मदद की कि किस प्रकार हम भविष्य में ऐसी आपदाओं से बेहतर तरीके से निपट सकते हैं।

निष्कर्षः–

कोविड–19 ने शिक्षा क्षेत्र में कई चुनौतियाँ प्रस्तुत कीं, लेकिन इसके साथ ही कई अवसर भी प्रदान किए। शैक्षणिक संस्थानों को इन अनुभवों से सीखकर भविष्य के लिए अधिक समावेशी और सुलभ शिक्षा प्रणाली विकसित करनी चाहिए। डिजिटल शिक्षा के विस्तार के साथ–साथ, यह सुनिश्चित करना भी महत्वपूर्ण है कि सभी छात्रों को समान अवसर और संसाधन उपलब्ध हों, ताकि शैक्षणिक असमानता को कम किया जा सके।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1. schooleducation.uk.gov.in
2. inspira-journal.com
3. bbc.com
4. drishtiias.com
5. news.un.org
6. highereducation.mp.gov.in
7. ijcrt.org
8. mayoclinic.org